04. दादी जी के महावाक्य

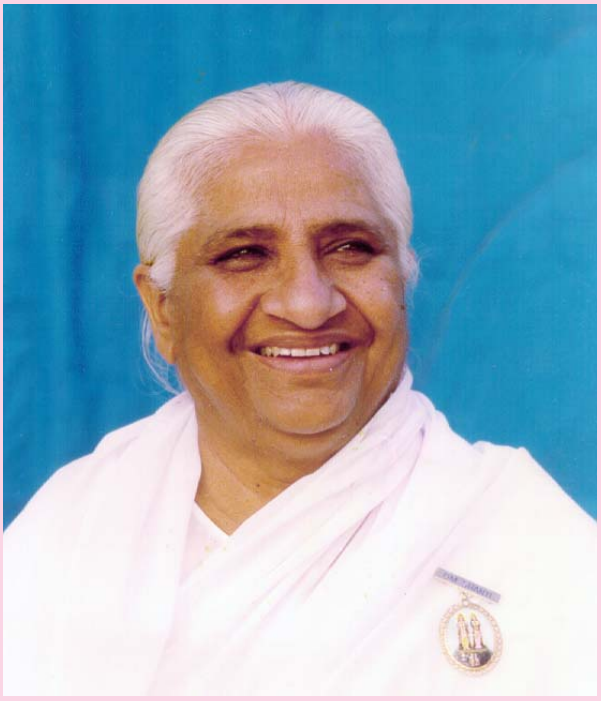

जब मैं सवेरे उठ बाबा की याद में बैठती हूँ तो चैक करती हूँ कि वरदाता बाप की वरदानी मूर्त आत्मा हूँ। हमें इन्हीं घड़ियों में बाबा से अनेक दुआयें ले अपने भंडार को भरना है। बाबा दुआओं से मेरे भंडार भरता है। मैं ऐसा कोई कर्म क्यों करूँ जो मेरी मिली हुई दुआयें बद्दुआ हो जायें। मुझे यह संकल्प सदा साथ रहता है कि मुझे दुआओं से अपनी झोली भरनी है। एक–एक मुझे दुआयें दे, मैं दुआओं को भरकर बाबा के घर जाऊँ। आपकी दुआयें बाबा की दुआयें हैं। मुझे हर सेकण्ड आपसे दुआओं का भंडार लेना है। मुझे दुआ लेनी है, दुआ देनी है, किसी की बद्दुआ नहीं लेनी है। यही पुरुषार्थ का बहुत अच्छा साधन है। सदा यह संकल्प रहे कि हमें सर्व की दुआयें लेनी है तो संकल्प, वृत्ति, वाचा सब सफल हो जायेंगे। मेरी एक घड़ी भी असफल हुई माना बद्दुआ; सफलता माना दुआ। यह बहुत ऊँचा पुरुषार्थ है।

हम शीतल योगी हैं। योगी की काया, दृष्टि, वृत्ति, बोल सब शीतल होगा। शीतलता ही हमारे जीवन का मीठा वरदान है। बच्चों को कंट्रोल करना यह हमारा फ़र्ज है लेकिन ताम्बे की तरह लाल–पीला होना यह हमारा फ़र्ज नहीं। अपनी ड्युटी का एडवान्टेज पुराने संस्कारों के अनुकूल नहीं करना है।

कई कहते हैं मेरे को जितनी ख़ुशी होनी चाहिए वह नहीं है। मैं उनसे पूछती हूँ बाबा मिला सबकुछ मिला, बाबा मिला राज्यभाग्य मिला, बाबा से सर्व वरदान मिले, फिर हमें कौन-सी ऐसी वस्तु चाहिए जिसके कारण ख़ुशी नहीं होती? फिर कई कहते हैं ग़मी भी नहीं है, ख़ुशी भी नहीं है। तो ज़रूर बीच में कोई चारे है इसलिए ख़ुशी नहीं। हमारा आधार है बाबा, हमने 'बाबा' अक्षर ही पढ़ा है, इसी बिन्दु में सबकुछ आ जाता है फिर मुझे ख़ुशी क्यों नहीं?

हम प्यार के सागर के पले हुए प्यारे बच्चे हैं। हम सब बाबा को कहते, बाबा, हमने इस बेहद की पुरानी दुनिया का संन्यास किया है, हम संन्यासी हैं, वैरागी हैं। हमें अब नयी दुनिया में जाना है। हम देवता थे फिर हमें देवता बनना है, यह भी हमें निश्चय है। सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, विजय हमारी हुई पड़ी है। भल कितने भी विघ्न पड़ें लेकिन सफलता या विजय हमारी हुई पड़ी है।

अच्छा, ओम् शांति।